रमेश और खोया हुआ थैला

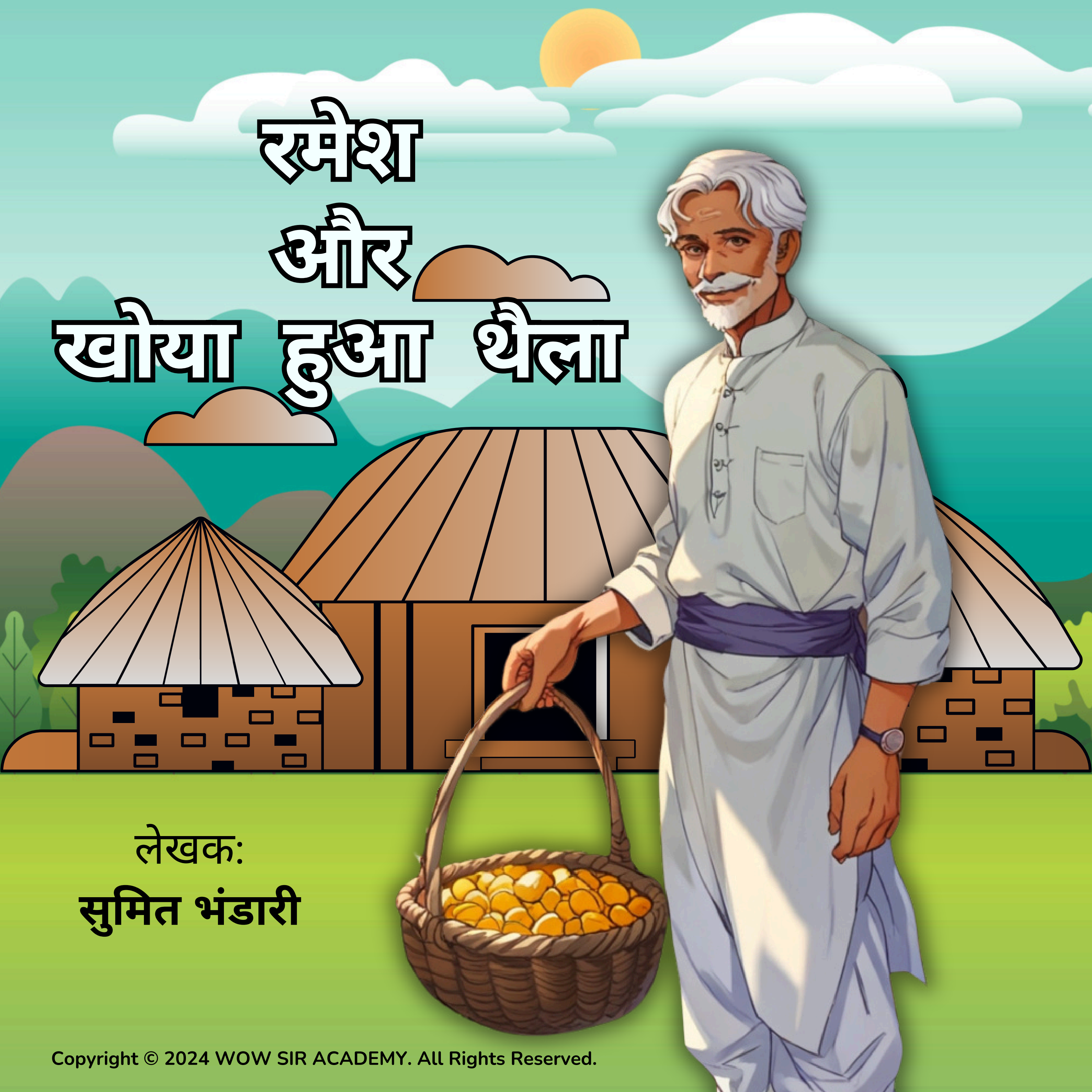

लेखक:
सुमित भंडारी

Copyright © 2024 WOW SIR ACADEMY. All Rights Reserved.

रमेश और खोया हुआ थैला

हरे-भरे खेतों और ऊँचे-ऊँचे पेड़ों से घिरे एक सुंदर से गाँव में एक दयालु और मेहनती किसान रहता था, जिसका नाम रमेश था। रमेश अमीर नहीं था, लेकिन उसके चेहरे पर हमेशा एक मुस्कान रहती थी। हर दिन वह अपने खेतों में कड़ी मेहनत करता, यह सोचते हुए कि एक दिन वह अपने परिवार को एक बेहतर जीवन जरूर देगा।

एक दिन दोपहर के समय, जब रमेश बाजार से घर लौट रहा था, तो उसने रास्ते में मिट्टी में कुछ चमकती हुई चीज़ देखी। जिज्ञासावश उसने उसे उठाया और देखा कि वह एक छोटा सा थैला था। जब उसने उसे खोला, तो उसकी आँखें आश्चर्य से बड़ी हो गईं। थैला चमचमाते हुए सोने के सिक्कों से भरा हुआ था।

कुछ पलों के लिए रमेश का दिल तेज़ी से धड़कने लगा। "यह सोना मेरे परिवार के लिए सब कुछ बदल सकता है!" उसने सोचा। लेकिन फिर, उसके अंदर एक छोटी-सी आवाज़ ने फुसफुसाया, "रमेश, ये सिक्के तुम्हारे नहीं हैं। शायद कोई इन्हें खोकर बहुत परेशान हो रहा होगा।"

रमेश वहीं खड़ा होकर सोचने लगा। क्या उसे यह थैला रख लेना चाहिए या लौटा देना चाहिए? उसकी ईमानदारी भरी सोच ने जीत हासिल की। उसने मालिक को खोजने का फैसला किया।

रमेश गाँव के चौक पर गया, जहाँ कई लोग जमा थे। थैला उठाकर उसने जोर से कहा, "मुझे यह थैला मिला है, जिसमें सोने के सिक्के हैं। अगर किसी का खो गया है, तो कृपया वह आकर मुझे बताये कि इसमें कितने सिक्के हैं।"

गाँव वाले आपस में चर्चा करने लगे। अचानक, एक बूढ़ा आदमी आगे बढ़ा, जिसकी आँखों में आँसू झलक रहे थे। "यह मेरा थैला है! " उसने रोते हुए कहा। "यह मेरी जीवन भर की बचत है। मैं यह पैसा अपनी बेटी की शादी के लिए जमा कर रहा था। इस थैले में 1500 सोने के सिक्के हैं।"

रमेश ने सिक्के गिने और बिना किसी झिझक के थैला उसे दे दिया। बूढ़े आदमी के हाथ कांप रहे थे जब उसने थैला लिया। "धन्यवाद, बेटा, " उसने कहा। उसकी आवाज भावनाओं से भर गई थी। "तुमने मेरा परिवार बचा लिया। तुम्हें सदा आशीर्वाद मिले।"

रमेश की ईमानदारी की खबर तेजी से दूर-दूर तक फैल गई। गाँव वालों ने उसकी खूब प्रशंसा की। साथ ही साथ उसकी मदद करने का फैसला भी किया। किसी ने बीज दिए, किसी ने औजार, और कई लोगों ने रमेश को खेती के सुझाव भी दिए। उनके सहयोग से रमेश के खेत पहले से कहीं अधिक लहलहाने लगे। जल्द ही, उसने इतनी फसल उगाई कि उसे बेचकर वह अच्छा खासा पैसा कमाने लगा।

रमेश का जीवन बदल गया, लेकिन यह बदलाव सोने की वजह से नहीं, बल्कि उसकी ईमानदारी और अपने गाँव वालो के प्यार की वजह से हुआ। उसने यह साबित कर दिया कि सही काम करना हमेशा अंत में खुशियाँ लाता है।

सीखः ईमानदारी एक बीज जैसी है–यह थोड़ा समय लेती है, लेकिन यह बढ़कर कुछ अच्छा बनती है जो आपकी और दूसरों की मदद करती है।

कहानी पसंद आई?

क्या आप और भी कहानियाँ चाहते हैं?
तो चलिए,
अपने अगले रोमांचक सफर की शुरुआत करें!

WOW SIR ACADEMY

Copyright © 2024 WOW SIR ACADEMY. All Rights Reserved.